नालंदा खुला विश्वविद्यालय - ई लर्निंग सामग्री

पाठ्यक्रम- एमजेएमसी पार्ट-01, पेपर- 02- माध्यमों का विकास

प्रमोद पांडेय, नेट उत्तीर्ण काउंसलर, पत्रकारिता व जनसंचार

स्वतंत्रता आंदोलन और हिंदी पत्रकारिता

भारत में पत्रकारिता का प्रारंभ एक विशिष्ट राजनीतिक वातावरण में हुआ। मुगल शासन अंतिम चरण में था और अंग्रेजी राज के प्रतिनिधि कंपनी के हाथ से सत्ता का हस्तांतरण सीधे ब्रिटिश राजशाही के जिम्मे करने को तत्पर थे। देश की राजनीतिक एकता छिन्न-भिन्न थी और आमलोगों को कहीं से आशा का संबल नहीं मिल रहा था। पहले स्वतंत्रता आंदोलन तक हिंदी पत्रों का मुख्य ध्येय सामाजिक परिवर्तन पर केंद्रित था लेकिन पहले स्वतंत्रता आंदोलन में भारत की पराजय और कंपनी शासन की जगह सीधे ब्रिटिश राजशाही के सूत्रपात ने राजनीतिक तौर पर भी भारतीयों की चेतना को झकझोर दिया। यह हार केवल मुगल शासक बहादुरशाह जफर और उनके साथी क्रांतिकारियों की नहीं थी। यह ऐसा परिवर्तन था जिसने निष्प्राण और चेतनाहीन जनमानस को झकझोरकर रख दिया। लोगों की जड़ता टूटी तो एक ओर जहां ब्रिटिश शासन का सूत्रपात हुआ वहीं दूसरी ओर हिंदी सेवियों की कलम ने आशा की ऐसी भावभूमि तैयार की जिसपर राष्ट्रीय आंदोलन की मजबूत इमारत देखते-देखते खड़ी हो गई।

राष्ट्रवाद और हिंदी पत्रकारिता -

1857 की क्रांति के बाद हिंदी पत्रकारिता के विकास और उन्नयन में जिस व्यक्तित्व की छाप सबसे गहरी है वे हैं भारतेंदु हरिश्चंद्र। भारतेंदु अपने समय के सबसे बड़े क्रांतिकारी पत्रकार यूं ही नहीं कहे जाते। जो स्थान बंगाल में राजाराम मोहन राय का है वही स्थान हिंदी पत्रकारिता में भारतेंदु हरिश्चंद्र का है। हिंदी पत्रकारिता के साथ हिंदी भाषा को मजबूती देने में उनका योगदान अप्रतिम है।

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल, बिन निज भाषा ज्ञान को मिटत न हिय को शूल... के जरिए उन्होंने अपनी भाषा की वकालत की। आश्चर्य नहीं कि जिसे आज हिंदी कहा जाता है वह खड़ी बोली के रूप में उन्हीं के प्रयास से प्रतिष्ठित और प्रतिस्थापित हुई थी।

वे बेहद निर्भीक पत्रकार थे। भारत दुर्दशा नामक नाटक में एक ओर भारत की दशा का वर्णन करते उन्होंने लोगों को झकझोरा- 'आवहू सब मिल रोवहू भाई, भारत दुर्दशा देखी न जाई' वहीं कविवचन सुधा के जरिए स्वाधीनता और स्वदेशी का प्रचार निर्भीकता से किया। 23 मार्च 1874 को कवि वचन सुधा में उनका उद्घोष स्वतंत्रता आंदोलन का ही उद्घोष और स्वदेशी चेतना का पहला शंखनाद है। इस दिन कविवचन सुधा में भारतेंदु ने एक प्रतिज्ञापत्र छापा जिसमें लिखा था - 'हमलोग आज के दिन से कोई विलायती कपड़ा नहीं पहिनेंगे। ....हिंदुस्तान में बना कपड़ा ही पहनेंगे।' स्वदेशी का प्रचार-प्रसार उनका ध्येय बन गया था। एक बार लिखा- जैसे हजार धारा होकर गंगा समुद्र में मिलती है वैसे ही तुम्हारी लक्ष्मी हजार तरह से इंग्लैंड, जर्मनी और अमेरिका को जाती है।

भारतेंदु ने कई पत्र-पत्रिकाओं का संपादन किया। नाम भले अलग-अलग रहे लेकिन सबका मूल कथ्य भारतीयों का जातीय अभिमान जागृत करना ही था। भारतेंदु इसमें पूरी तरह सफल रहे। हरिश्चंद्र मैगजीन, हरिश्चंद्र चंद्रिका और भारतमित्र

सरीखे पत्र जहां भारतेंदु की हिंदी सेवा और राष्ट्रसेवा के ध्वजवाहक बने वहीं इस काल में ब्राह्मण, उचित वक्ता, बिहार बंधु आदि ने एक ओर जहां हिंदी के विकास में योगदान दिया वहीं इनके आलेख लोगों को अंग्रेजी शासन के विरोध की भावभूमि भी तैयार करते रहे।

प्रेस एक्ट का विरोध-

लार्ड लीटन ने १८७८ में बर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट लागू किया। इसका मूल उद्देश्य देशी भाषा के पत्रों पर कड़ा नियंत्रण था लेकिन प्रतिक्रिया भी उसी रूप में होनी थी। भारतमित्र (१८७८) सारसुधानिधि (१८७९) और उचित वक्ता (१८८०) का जन्म ही इसी परिवेश में हुआ और इसके स्वनाम धन्य संपादकों ने प्रतिकूल परिस्थिति में भी अत्यंत निर्भीकता से इस एक्ट और एक्ट के बहाने अंग्रेजी राज की दमनकारी नीतियों की आलोचना की। उचित वक्ता में दुर्गाप्रसाद मिश्र और सारसुधानिधि में सदानंद मिश्र ने दो टूक शब्दों में सरकार को चेतावनी दी।

लोगों की उत्सुकता इन पत्रों में बढ़ी तो और पत्र-पत्रिकाओं का भी प्रकाशन शुरू हुआ। पं.दुर्गा प्रसाद मिश्र ने तत्कालीन पत्रकार बिरादरी को भी झकझोरा। उचित वक्ता में लिखा- देशीय संपादको, सावधान। कहीं जेल का नाम सुनकर किंकर्तव्यविमूढ़ मत हो जाना... जेल क्या यदि द्वीपान्तरित भी होना पड़े तो क्या बड़ी बात है? उनकी आक्रामक मुद्रा उस युग के लिए असाधारण बात थी।

तिलक का हिंदी पत्रकारिता पर असर

केसरी और मराठा में तिलक ने जो सिंह गर्जना की, उसी समय हिंदी पत्रकारिता भी उसी तरह का नाद कर रही थी, यह हिंदी पत्रकारिता और पत्रकार बिरादरी के लिए गौरव की बात है कि तब के संपादक किसी भी कीमत पर देश, स्वतंत्रता और स्वदेशी से समझौते को तैयार नहीं थे। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना १८८५

में हुई और इससे पहले ही स्वदेशी और स्वदेश के लिए सर्वस्व निछावर करने का संकल्प पत्रकारिता के जरिए जनमानस में स्थान बना चुका था। केसरी का हिंदी रूपांतरण इस रूप में महत्वपूर्ण रहा कि इसे उत्तर भारत में व्यापक प्रसार मिला। मराठा और केसरी के आलेखों का हिंदी में अनुवाद करके दूसरे अखबारों ने भी नियमित छापा।

बंग भंग और हिंदी पत्रकारिता

बीसवी सदी का शुरुआती वर्ष अशांति और जन उद्वेलन का समय था। बंगाल का विभाजन कर्जन की दमनकारी नीति का प्रमुख अस्त्र बना जो तब की प्रमुख राजनीतिक परिघटना थी। बंग भंग की प्रतिक्रिया गहरी और व्यापक हुई। इससे जो चेतना जागृत हुई उसकी आधारभूमि पत्रकारिता ने पहले ही तैयार कर दी थी।

इस आंदोलन की परिणति एक ओर जहां वंदेमातरम के उद्घोष के रूप में हुई वहीं भारतीयों का जातीय स्वाभिमान जाग उठा। देशभक्ति की नई अवधारणा में स्वदेश और स्वदेशी को पूरा बल मिला। स्वदेशी आंदोलन का काल हिंदी पत्रकारिता का तृतीय चरण है। दुर्गाप्रसाद मिश्र और सदानंद मिश्र की परंपरा को इस काल में आगे बढ़ाने वाले प्रमुख पत्रकार और नायक बाबू बालमुकुंद गुप्त थे जिन्होंने भारतमित्र और हिंदोस्थान के जरिए अलख जगाने का अभियान जारी रखा। अपनी लेखनी के कारण उन्हें हिंदोस्थान के संपादकीय विभाग से विमुक्त भी होना पड़ा। हरमुकुंद शास्त्री, रुद्रदत्त शर्मा, अंबिका प्रसाद बाजपेयी, बाबूराव विष्णु पराडकर और लक्ष्मण नारायण गर्दे उस काल के स्वनामधन्य पत्रकार थे।

बालमुकुंद गुप्त की लेखनी प्रखरता और ओज में अलग ही थी। लार्ड कर्जन के दिल्ली दरबार में शामिल गुप्त जी ने बाद में सरकार की नीतियों का खुलम खुल्ला विरोध शुरू कर दिया। भारतमित्र और गुप्त जी एक दूसरे के पर्याय बन गए।

सरस्वती के जरिए हिंदी साहित्याकाश में आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी का आगमन भी राष्ट्रवाद को पुष्पित-पल्लवित करने वाला ही रहा। साहित्यसंस्कृति के माध्यम से सरस्वती उसी रोशनी को जगा रही थी जिसकी रचना में वंदेमातरम, मराठा, केसरी, भारतमित्र और युगांतर जैसे पत्र क्रियाशील थे।

गांधी युग का सूत्रपात-

भारतीय राजनीति का गांधीयुग हिंदी पत्रकारिता की समृद्धि का युग है। कलकत्ता कांग्रेस में राष्ट्रभाषा का प्रश्न चर्चा में आया तो हिंदी की जमीन जैसे और पुख्ता हो गई। अनेक दैनिक पत्रों का प्रकाशन और खासकर बाबूराव विष्णु पराडकर जी के नेतृत्व में आज (१९२०) की शुरुआत तब की बड़ी घटना थी। पराडकर जी हिंदी पत्रकारिता के महानतम नायक के रूप में प्रसिद्ध हैं। गांधी का नेतृत्व स्वीकारने वाले पराडकर जी को उन्हें टोकने में भी तनिक भी संकोच नहीं होता था। आज के प्रथम संपादकीय में ही उन्होंने कहा- हमारा उद्देश्य अपने देश के लिए सर्व प्रकार से स्वातंत्र्य उपार्जन है। हम हर बात में स्वतंत्र होना चाहते हैं...।

प्रताप, कर्मवीर, वीणा, चांद, मतवाला, सुधा, माधुरी, हंस, विशाल भारत, हिंदू पंच, गंगा , हिमालय जैसी पत्रिकाओं ने न केवल हिंदी के विकास में योगदान दिया, बल्कि स्वतंत्रता आंदोलन की लौ को और प्रज्वलित करना जैसे उनका ध्येय वाक्य था। दैनिक पत्रों में आज, आर्यावर्त, विश्वमित्र, प्रताप जैसे अखबार रोज लोगों को झकझोरने वाले साबित हुए।

प्रतिबंधित पत्र-पत्रिकाएं

एक ओर हिंदी के पत्र अंग्रेजी सरकार के विरुद्ध जनमानस को तैयार करने में अग्रणी भूमिका निभा रहे थे वहीं ब्रिटिश शासन ने कई लेखों और पत्र-पत्रिकाओं को जब्त कर जहां उनका प्रसार रोका वहीं संपादकों-प्रकाशकों को जेल यातना भी

सहनी पड़ी। ऐसे आलेख और विशेषांकों में जवाहर लाल नेहरू द्वारा 'वर्तमान पत्र' में लिखा गया 'राजनीतिक भूकम्प' शीर्षक लेख, 'अभ्युदय' का भगत सिंह विशेषांक, किसान विशेषांक, 'नया हिन्दुस्तान' के साम्राज्यवाद, पूंजीवाद और फॉसीवादी विरोधी लेख, 'स्वदेश' का विजय अंक, 'चाँद' का अछूत अंक, फाँसी अंक, 'बलिदान' का नववर्षांक, 'क्रांति' के 1939 के सितम्बर, अक्टूबर अंक, 'विप्लव' का चंद्रशेखर अंक अपने क्रांतिकारी तेवर और राजनीतिक चेतना फैलाने के इल्जाम में अंग्रेजी सरकार की टेढ़ी निगाह के शिकार हुए और उन्हें जब्ती, प्रतिबंध, जुर्माना का सामना करना पड़ा। संपादकों को कारावास भुगतना पड़ा।

चाहिए पत्र संपादक - वेतन दो सूखी रोटियां..

स्वतंत्रता आंदोलन में हिंदी पत्रकारिता की भूमिका की चर्चा अधूरी रह जाएगी अगर लीडर, रणभेरी और विप्लव जैसे पत्र-पत्रिकाओं का जिक्र न हो। लीडर प्रयाग का प्रमुख प्रकाशन था। इसे महामना पंडित मदन मोहन मालवीय और अन्य कई हस्तियों का सान्निध्य हासिल था। रणभेरी अपने आक्रामक रवैये के लिए जाना जाना था। यथानाम-तथागुण यह वास्तव में रणभेरी ही था। इसका प्रकाशन स्थल नियत नहीं था। यहां रोका जाता तो वहां से प्रकाशन शुरू हो जाता था।

आजादी के आंदोलन में पत्रकारिता के योगदान पर जब भी चर्चा होती है तो संक्षेप में अपनी बात कहने के लिए स्वराज्य अखबार के संपादकीय का उल्लेख ही पर्याप्त है। इस अखबार ने संपादक पद के लिए विज्ञापन कुछ इस तरह दिया था- ''चाहिए स्वराज्य के लिए एक संपादक। वेतन-दो सूखी रोटियां, एक गिलास ठंडा पानी और प्रत्येक संपादकीय के लिए दस साल जेल।''

अकबर इलाहाबादी ने अखबारों के संदर्भ में उनकी उपयोगिता को रेखांकित करते हुए जो शेर लिखा वह बताने के लिए पर्याप्त है कि देश की आजादी के आंदोलन में पत्रकारिता और पत्रकारों की भूमिका कितनी और कैसी थी।

खींचो न कमानों को न तलवार निकालो।

जब तोप मुकाबिल हो तो अखबार निकालो...।

इस प्रकार हम देखते हैं कि स्वतंत्रता आंदोलन में हिंदी पत्रकारिता और हिंदी पत्रकारों का योगदान अप्रतिम था। यह कहना गलत होगा कि केवल हिंदी पत्रकारिता ही स्वतंत्रता आंदोलन का ध्वजवाहक बनी। भाषाई पत्रों में प्रायः सबने इस आंदोलन में अपने-अपने तरीके से योगदान दिया। उम्मीद के विपरीत अंग्रेजी पत्रकारिता की भूमिका भी कम सराहनीय नहीं रही। अंग्रेजी अखबारों-पत्रिकाओं में छपे लेख न केवल भारत में वरन ब्रिटेन तक धूम मचाते रहे। शासक वर्ग तक अपनी बात पहुंचाने का माध्यम बन एक ओर जहां अंग्रेजी पत्र-पत्रिकाओं ने अपनी भूमिका निभाई वहीं जनजागृति के लिहाज से हिंदी और अन्य भाषाई पत्रों का योगदान अविस्मरणीय रहा। आज की पत्रकारिता को देखकर यह विश्वास करना कठिन है कि कभी अंग्रेजी शासन की जड़ें उखाड़ने की आधारभूमि पत्रकारिता ने ही तैयार की थी। समय भले बदल गया है लेकिन पत्रकारिता के उच्च आदर्शों और मानदंडों का जो दिग्दर्शन हमें स्वतंत्रता आंदोलन में होता है वह हमारे राष्ट्रीय चरित्र का ही उद्घोष है।